दिनाँक :- 07-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक़ आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- द्वितीय खंड

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- नौ

पत्र :- चतुर्थ

अध्याय :- चीन तथा प्रथम विश्व युद्ध

वर्साई संधि के सुदूर पूर्वीय प्रावधान

शांति समझौता के फलस्वरूप चीन वर्साय संधि से संबंधित जर्मनी को दिए जाने वाले अपने सारे दायित्वों से मुक्त हो गया। तिंत्सीन और हांको में जर्मनी की सुविधाएँ समाप्त की गई। वह युद्ध काल में जर्मन नागरिकों को नजरबंद तथा चीनी समुद्र में जर्मन

जहाजों के पकड़े जाने के दायित्वों से मुक्त हो गया।
बॉक्सर विद्रोह काल में चीन की वेधशाला से जो उपकरण लिए गए थे उनकी वापसी कर दी गई। जापान चीन में जर्मन प्रदेश शांतुंग और किया वोचाऊ खाड़ी का उत्तराधिकारी बना। तीन राष्ट्रों की परिषद् (council of three) ने उसके उत्तराधिकारी होने का मौखिक वचन इस शर्त पर दिया कि वह चीन से प्रत्यक्ष वार्ता करके उस प्रांत से अपने आर्थिक अधिकारी तथा सुविधाओं को छोड़कर सारी राजनीतिक अधिकार लौटा देगा। यह भी कहा गया है कि चीन को राष्ट्रसंघ में शामिल किया जाएगा। शांतुंग पर जापान के आर्थिक प्रतिबंध बने रहे। चीनियों ने इसे अपने हित में अनिष्टकारी बतलाया। शांति सम्मेलन में चीनी प्रतिनिधियों ने भी इसका विरोध किया था और दस्तावेज पर हस्ताक्षर करने से अस्वीकार

कर दिया था छात्रों ने भी इसके लिए आंदोलन मचाया, किंतु सरकार ने आंदोलन को दबा दिया। तब व्यापारियों ने जापानी मालों का बहिष्कार आंदोलन शुरू किया इसका बड़ा प्रभाव पड़ा। जापान से सूती धागों का आयात पहले बारह हजार पिकल (Picul) होता था अब चार हजार पिकल होने लगा। इन दबावों के कारण शांतुंग के मामले में जापान वार्ता के लिए तैयार हो गया। लेकिन पीकिंग ने वार्ता करना अस्वीकार कर दिया। उसका कहना था कि पहले जापान बिना वार्ता के शांतुंग वापस करे। यह गतिरोध वाशिंगटन सम्मेलन तक बना रहा।

सहायता संघ (Consortium) का पुनरुत्थान

प्रथम विश्व युद्ध काल में संयुक्त राज्य अमरीका के राष्ट्रपति वुड्रो विल्सन ने यह महसूस किया कि अंतर्राष्ट्रीय

सहयोग द्वारा चीन को वित्तीय सहायता मिलनी चाहिए।
कारण यह था कि जापान चीन को वित्तीय सहायता
देकर उसके वित्त पर नियंत्रण डाल रहा था। अमरीका
इसे रोकना चाहता था। फलतः अमरीकी राज्य विभाग
ने अंतर्राष्ट्रीय समूह के पुनर्गठन पर ध्यान दिया। वह
इससे जर्मनी और रूस को अलग करना चाहता था
लेकिन संयुक्त राज्य अमरीका को शामिल करना चाह
ता था। इस तरह सहायता संघ में चार शक्तियाँ
(Consortium of four Powers) थी। इनके नाम
हैं इंगलैंड फ्रांस, संयुक्त राज्य अमरीका और जापान
इसका प्रमुख कार्य चीनी सरकार को वित्तिय सहायता
पहुँचाना तथा चीन के उद्योग और यातायात का विकास
करना था। अनेक देशों के वित्तीय अभिकर्ताओं से
वार्ता की गई। जापान मंचूरिया और पूर्वी भीतरी

मंगोलिया को सहायता संघ की गतिविधियों से अलग रखना चाहता था, यद्यपि वे चीन के अभिन्न अंग थे तथा सहायता संघ का क्षेत्र चीन ही था। बहुत कठिनाई से उन्हे इस पर राजी किया गया लेकिन उन्हे यह आश्वासन दिया गया कि वहाँ कोई काम उनके हित के विरुद्ध में नही किया जायगा। 1920 ई० में सहायता संघ की स्थापना की गई लेकिन चीन के विरोध के कारण यह कोई काम नही कर सका चीन को भय था कि इससे उस पर अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय नियंत्रण की स्थापना हो जायगी। धीरे धीरे उसका यह समय दूर हुआ तथा उसे विश्वास हो गया कि सहायता संघ चीन का आर्थिक विकास चाहता है फिर भी यह निष्क्रिय रहा क्योंकि इस समय चीन अपने गृह मामलो में उलझा हुआ था तथा संघ के सदस्यो में उदासीनता की भावना थी।

चीन द्वारा संधि के अस्वीकार करने के परिणाम

चीन ने वर्साई संधि के उन उपबंधों को मानने से अस्वीकार कर दिया था जिनमें शाँतुंग का उल्लेख था। चीन के प्रतिनिधियों ने इस पर हस्ताक्षर भी नहीं किया था। इस से यह स्पष्ट होता गया कि प्रथम विश्व युद्ध में चीन और जापान की सहभागिता के कुछ प्रश्नों का समाधान शेष है। इनका समाधान वाँशिंगटन सम्मेलन में किया गया। एक अन्य प्रश्न चीन और जर्मनी में कूटनीतिक संबंध का था। चीन और जर्मनी के बीच 15 सितम्बर 1919 ई० को युद्ध का अंत हो गया। इस के साथ ही जर्मन कूटनीतिक एंव वाणिज्यीय संबंध जुड़ गए। 20 मई 1921 ई० को दोनों के बीच एक समझौता भी हुआ। 28 जून को चीनी राष्ट्रपति ने इसकी संपुष्टि की। इसके द्वारा चीन में जर्मनी के राज्यक्षेत्रातीत अधिकार समाप्त हो गए तथा जर्मनी

के आयात निर्यात के बारे मे चीन को सीमा शुल्क की स्वायत्तता दी गई।
इसी तरह जर्मनी ने भी वर्साई संधि के 128-134 अनुच्छेदो को मान लिया! इनके द्वारा युद्ध पूर्व चीन मे जर्मनी के विशेष सुविधाओ का अंत हो गया। युद्ध दावो का भी निपटारा कर लिया गया। किंतु चीन और जापान के बीच विवाद बने रहे।
निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है प्रथम विश्व युद्ध ने सुदूर पूर्व की समस्या को जटिल कर दिया। इसका कारण चीन के उत्तरी क्षेत्र मे मित्र राष्ट्रो का हस्तक्षेप था, रूस मे जारशाही के उन्मूलन और बोलशेविको के सत्ता मे आ जाने के बाद सुदूर पूर्व की समस्या और भी गंभीर हो गई।
किंतु जापान की गतिविधियाँ केवल पीकिंग तक है.